Election Commission of India

16

NAME OF THE NEWSPAPER पंजाब केसरी DATE: 22 JAN 2013

एक ऐलान जिसका सबको है इंतजार...

दिल्ली 2 कदम आगे 4 कदम पीछे

प्रविन्द्र शारदा

क्योंकि वर्ष 2013 दिल्ली की जमीन पर विधानसभा चुनाव परिणामों का चश्मदीद बनेगा इसलिए कांग्रेस और भाजपा जिनमें अक्सर सीधी टक्कर रहती है मैदान में डटे हुए हैं। यह बात अलग है कि इन दोनों फौजों के जो संगठन के दृष्टिकोण से सेनापति बने हुए हैं वे फिलहाल अपने-अपने भाग्य के फैसले का इंतजार कर रहे हैं। चाहे दिल्ली प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष जयप्रकाश अग्रवाल हों या भाजपा की दिल्ली इकाई के प्रधान विजेन्द्र गुप्ता हों, इन दोनों के बारे में कहा जा रहा है कि आलाकमान शीघ्र फैसला करेगा। यह बात अलग है कि फैसला हुआ नहीं। अगर फैसला हो गया है तो फिर उसका ऐलान नहीं हुआ।

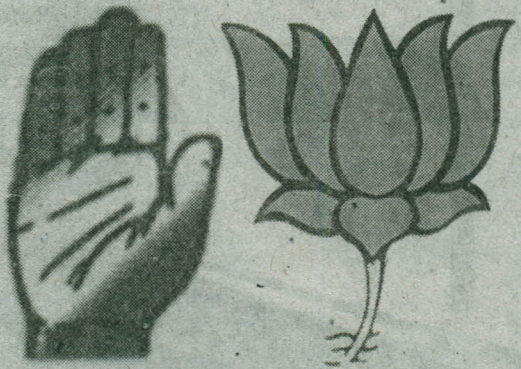

खबर है कि जयप्रकाश अग्रवाल के बारे में आलाकमान ने फैसला अंदरखाते ले लिया है। यह फैसला थोड़ा देर से लिया जाना था, परन्तु जयप्रकाश अग्रवाल ने जो 70 विधानसभाई इलाकों के लिए पर्यवेक्षक घोषित किए, उसे लेकर प्रभारी चौ. विरेन्द्र सिंह ने सवालिया निशान खड़े कर दिए थे। उधर जयप्रकाश अग्रवाल सारे मामले पर भले ही चुप हों लेकिन उन्होंने प्रदेश अध्यक्ष के तौर पर दिल्ली में बाकायदा चुनावी बिगुल बजाकर हंगामा जरूर खड़ा कर दिया था। लेकिन यह भी तो सच है कि इतना बड़ा पग उन्होंने कांग्रेस के दिग्गजों और रणनीतिकारों से सलाह-मशविरे के बाद ही उठाया होगा। अब भी वह ग्रुप जो जयप्रकाश अग्रवाल से इत्तेफाक नहीं रखता, का दावा है कि जयप्रकाश अग्रवाल के भाग्य के बारे में जो फैसला लिया गया है वह बदलाव से जुड़ा है और जल्द ही दिल्ली वालों के सामने तस्वीर उभर आएगी। सूत्रों का दावा है कि यह तस्वीर दलित समीकरणों पर आधारित हो सकती है। यह बात अलग है कि राजनीति में अंतिम क्षणों में बहुत कुछ बदल जाता है, लेकिन हमारा दावा है कि फिलहाल सब कुछ दलित राजनीति पर केन्द्रित होने जा रहा है और इस मामले में विद्वता को लेकर जो राजनीतिक कयास लगाए जा रहे थे उन्हें सीएम से जुड़े सूत्र ठुकरा चुके हैं। सब जानते हैं कि दिल्ली में फिलहाल वैश्य आधारित राजनीति के चलते वोटों का गणित काफी हद तक बैठाया जाता है और इसमें पंजाबी भी बराबर के दावेदार रहे हैं। मुस्लिम, सिख, इसाई, एससी-एसटी, ओबीसी इत्यादि को लेकर कांग्रेस में समय-समय पर समीकरण बनते-बिगड़ते रहते हैं। कह सकते हैं कि आने वाले दिनों में कांग्रेस की तरफ से अब कौन-सा ऐलान दिल्ली की राजनीति को लेकर किया जाएगा।

जबकि भाजपा कैम्प से छन-छन कर खबरें बता रही हैं कि आलाकमान ने आरएसएस के शीर्ष नेताओं से सलाह-मशविरे के बाद एक खास नाम पर मन बना लिया है। जिस खास नाम को फाइनल टच दिए जाने की तैयारी चल रही है उनके बारे में कहा जा रहा है कि आजकल उनकी बाडी लैंग्वेज में गजब का विश्वास देखा जा रहा है। भाजपा के विश्लेषक बताते हैं कि आप सभी दावेदारों के बाडी लैंग्वेज पर नजर रखें और आकलन करें तो आपको जवाब मिल जाएगा। हमारे पास इसका जवाब नहीं है लेकिन भाजपा कैम्प का दावा है कि इंतजार करो आपको सही जवाब मिल जाएगा।

यह पूछे जाने पर कि क्या अध्यक्ष दूसरी पारी खेलेंगे या नया खिलाड़ी मैदान में उतरेगा, क्या यह महिला हो सकती है तो जवाब मिला 'कुछ भी हो सकता है। आप समय का इंतजार कीजिए।' कांग्रेस और भाजपा के इन भावी अध्यक्षों पर बसपा की भी नजर है तथा इस बार रामवीर विधूड़ी भी अपनी ताकत 2013 में दिखाने को तैयार हैं, लेकिन यह जंग तो बाद में लड़ी जाएगी फिलहाल कांग्रेस और भाजपा के वर्करों में अपने-अपने नए अध्यक्षों के भाग्य को लेकर अंदर ही अंदर खींचतान चल रही है।